P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

टैगोर : मानवीयता ही राष्ट्रीयता का आधार

सारांश

रविन्द्रनाथ टैगोर ने राष्ट्रीयता, आध्यात्मिकता, मानवता, और संस्कृति की महत्ता का हमेशा सम्मान किया है। इन्ही विचारों से उन्होंने साहित्य की पराकाष्ठा को छुआ है। उनके जीवन में भारतीय दर्शन और संस्कृति का गहरा असर हुआ है। जिसे उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात कर भारतीय जीवन में नयी चेतना भर दी। वे मानवता और एकता के दर्पण में राष्ट्रीयता का प्रतिबिम्ब देखते है। उनका मत था कि मानवता की शांति के बिना राष्ट्र कल्याण की कल्पना कोरी है। टैगोर ने राष्ट्रवाद के नाम पर नरसंहार और असहिष्णुता का खंडन किया है और कहा है कि राष्ट्रवाद की इस संकीर्ण विचारधारा ने मानव के मन में वैमनस्य और स्वार्थ उत्पन्न कर दिया है। राष्ट्रवाद के राजनीतिकरण और व्यापारीकरण ने राष्ट्र की आत्मा को छिन्न–भिन्न कर दिया है। इस तरह देश के अध्यात्मिक और प्राकृतिक विकास पर भी चोट की गयी है। टैगोर जानते है कि राष्ट्रवाद की यह संकीर्ण सोच भारत की अध्यात्मिक चेतना और मानवीय मूल्यों पर आघात कर सकती है परन्तु इसकी नींव को हिला नहीं सकती है।

मंजु बिश्नोई
शोधार्थी,
अंग्रेजी विभाग,
जय नारायण व्यास यूनिवर्सिटी,
जोधपुर, राजस्थान

मुख्य शब्द : टैगोर, मानवीयता, एकता, आध्यात्मिकता, राष्ट्रवाद, संकीर्ण, विचारधारा।

प्रस्तावना

रबिन्द्रनाथ ठाकुर के व्यक्तित्व के बारे में लिखना एक सागर की विशालता के बारे में लिखने जैसा है। जितना भी लिखा जाये शब्दों का सदैव अभाव रहेगा। उनके असामान्य व्यक्तित्व ने आम जनमानस पर अमिट छाप छोड़ी है। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानवता की पीड़ा का उपचार करने और देश की खोयी हुई चेतना और आत्मविश्वास को पुनर्जीवित करने में लगा दिया। उन्होंने अपनी कठिन साधना और तपस्या से न केवल साहित्य को नए विचार दिए बल्कि भारतीय दर्शन में नए आयाम जोड़े। मानवजाति की एकता, मानव विकास, आत्म–चिंतन, प्रेम और भक्ति के विचारों से टैगोर ने राष्ट्र निर्माण और विश्व कल्याण की कल्पना की। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनका परिचय कवि या दार्शनिक या लेखक या शिक्षाविद् या संगीतकार, किस रूप में दिया जाये, इसे समझने में वक्त लगेगा क्योंकि सभी क्षेत्रों में उनका अमूल्य योगदान रहा है। रबिन्द्रनाथ टैगोर का जन्म ७ मई १८६१ को कलकत्ता के जोरसांको में हुआ। प्रसिद्ध कविता संग्रह "गीतांजलि" के लिए वर्ष १९१३ में उनको नोबेल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि गीतांजलि काव्य का प्रकाश आज भी भारत और विश्व साहित्य के ब्रह्माण्ड में जगमगा रहा है। इस अनमोल और अमर कृति का भारतीय दर्शन पर गहरा असर पड़ा है। उनकी रचनाएँ "जन गन मन" भारत का और "आमार सोनार बंगला" बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान बना। इस युग में देशप्रेम की भावना अति तीव्र थी और सामाजिक कल्याण के लिए जातीयता और साम्प्रदायिकता जैसे अहितकारी कारको की भर्तसना की गयी। इसमें भारतेंदु हरिश्चंद्र, गाँधी, विवेकानंद, अरविन्द घोष आदि महान लोगों का बहुत योगदान रहा है। क्रांति कुमार शर्मा ने अपनी किताब, हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य का विकास, में लिखा हैरू "हिंदी साहित्य के आधुनिक युग का लक्ष्य जनमानस का ध्यान देश की हीनावस्था, दुर्दशा, तथा पत्तन की ओर आकर्षित करते हुए उसमे सुधार और परिवर्तन लाने की ओर अधिक रहा है। अंग्रेजों की प्रशंसा तथा अपने गौरवमय अतीत के वर्णन के साथ ही साथ इस युग के कवियों ने वर्तमान युग कि विषम परिस्थितियों एवं कुरीतियों का भी चित्रण किया है" (१५०)।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि उनके व्यक्तित्व और लेखनी में अद्भुत समानता पाई जाती हैं। वह जो सोचते थे, जो मानते थे, उन भावों को शब्दों का स्वरुप दे देते थे। उन्होंने समाज में मानवता के मूल्यों को स्थापित किया और

संदेश दिया कि मानवता की रक्षा ही समाज की सुरक्षा हैं। वर्ष १९१९ के जलियावाला बाग हत्याकांड के बाद टैगोर ने अंग्रेजो द्वारा दिए गए सम्मान 'नाइटहुड' का त्याग किया और यह जतला दिया कि मानवता का अहित करके हम किसी मानव का हित या सम्मान नहीं कर सकते। हालाँकि उनके राजनितिक विचार बहुत जटिल थे परन्तु उन्होंने अपने उसूलों के साथ कभी किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया। उनका मत था कि एक भारत कि कल्पना 'एक मानव' के विचार पर टिकी है, जहाँ जाति, धर्म, रंग, आदि का भेदभाव मिटाकर समभाव के विचार को प्राथमिकता दी जाती हैं।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीयता को टैगोर के शब्दों और विचारों से परिभाषित करना है। राष्ट्रीयता की अवधारणा को वर्तमान स्थिति में दूषित कर दिया गया है और इसके असीमित दृष्टिकोण को सिमित कर दिया गया है। देशभक्ति की भावना बहुत ही पवित्र और निस्वार्थ सिद्धांतो पर आश्रित है जिसे टैगोर ने अपने निबंधों और कविताओ में उजागर किया है।

अध्ययन काल

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन एवं लेखन जून २०१४ से अगस्त २०१५ के मध्य किया गया है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध लेख से सम्बन्धित टैगोर के निबंधो और कविताओं का अध्ययन किया गया है। टैगोर के निबंधों के संकलन को एक निश्चित विषय पर केन्द्रित करना कठिन है। इस पत्र में टैगोर के निबंधों का गहन अध्ययन किया गया है। इसके अलावा क्रांति कुमार शर्मा की किताब हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य का विकास का भी अध्ययन किया गया है। क्रांति कुमार शर्मा ने अपनी किताब में भारत के आधुनिक युग के साहित्य का विस्तारपूर्वक चित्रण किया है और यह दर्शाया है कि हिंदी साहित्य ने जनमानस का ध्यान देश की हिनावस्था, दुर्दशा तथा पत्तन की ओर आकर्षित करते हुए उसमे सुधार और परिवर्तन लाने की ओर अधिक किया है। उन्होंने किताब में देश के गौरवमय अतीत का वर्णन किया है साथ ही नवीन युग के कवियों द्वारा देश में सुधार लाने और लोगों में राष्ट्र भावना पैदा करने का चित्रण भी किया है। हर युग के कवियों और लेखकों के विचार संक्षिप्त और प्रभावी ढंग से रखे गए है। इनके राष्ट्रभाव और देशभक्ति की कविताओं के संकलन और विचारों का इस पत्र में गहन अध्ययन किया गया है। इसके अलावा नवदीप सूरी द्वारा सम्पादित भारत संदर्श नामक पत्रिका के अंक २ और खंड २४, के विशेषांक को रबिन्द्रनाथ टैगोर को समर्पित किया गया है। जिसमे उनके जीवन के विविध पहलुओं को दर्शाया गया है और टैगोर के सार्वभौम मानववाद में विश्वास तथा राष्ट्रीयता के प्रति उनकी संतुलित भावना आदि विचारों का सटीक वर्णन किया गया है। उदय नारायण सिंह, पत्रिका के सह सम्पादक, ने अपने विचारों को रखते हुए कहा है कि "विश्व का स्वरुप परिवर्तित हो रहा है। समय गुजरने के साथ में परिवर्तन अनेक रूपों में प्रकट हो रहे है जो उद्वेलित करते हैं। हर बार जब भी विनाश और निराशा के बादल घिर आते हैं तो मन में यह विश्वास पुनः जागृत हो उठता है कि टैगोर जैसे विचारक और कर्मयोगियों की अटल धारणा थी कि अन्ततोगत्वा सत्य और सुन्दरता की ही विजय होगी" (२)। इस तरह आशावादी सोच के साथ टैगोर पर अविस्मणीय लेखों का विस्तृत अध्ययन इस पत्र में किया गया है। विकास चक्रवर्ती ने अपने लेख "टैगोर का स्वदेशी समाज राष्ट्रवाद पर बहस", में टैगोर के विचार रखे है जिसमे गाँवो के पुनर्गठन और मानव की कर्मठता से ही राष्ट्र की तरक्की संभव, आदि विचार सम्मिलित है। इस लेख के विचारों का भी अध्ययन किया गया है। इसके अलावा ताप्ति दासगुप्ता और कुंजो सिंह ने अपनी किताबों में टैगोर की राष्ट्रीयता की भावना को हमेशा मानवता के साथ जोड़ कर दिखाया है जिनका भी इस पत्र की रचना के समय ध्यान से अध्ययन किया गया है।

विश्लेषण

टैगोर के जीवन में भारतीय दर्शन और संस्कृति का गहरा असर हुआ था। जिसे उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात कर भारतीय जीवन में नयी चेतना भर दी। उन्होंने सनातन आध्यात्मिकता को भारत के उज्ज्वल भविष्य का आधार माना है। उनका मानना था कि मिट्टी के बंधन से मुक्त हो कर पेड़ कि आजादी फलदायी नहीं है। उसी प्रकार मानव का देश की मिट्टी से जुड़ना आवश्यक है जिससे मानवता का वृक्ष और फले फूले। उन्होंने अपने दरवाजे पश्चिमी ज्ञान की हवा के लिए हमेशा खुले रखे। उनका मानना था कि सत्य और ज्ञान की खोज के लिए मानव को बाहरी भेद मिटाने होगें और पूरब–पश्चिम के फर्क को महत्व नहीं देना होगा। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं हैं कि वह पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करते थे, उनका मानना है कि पश्चिम रुपी सागर में ज्ञान का मोती चाहिए तो उसके लिए सागर में जाना होगा। वे भारत के यूरोपीकरण का विरोध करते थे लेकिन पूरब–पश्चिम के समन्वय को जरूरी समझते थे। टैगोर जानते थे कि बावजूद भारत की भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमि और रूपरेखा होते हुए, इसके अंतर में एकता का वास है। इसी एकता में भारतीयता की पहचान बनी है।

आनंद के महासिंधु की लहर पे सवार,
ब्रह्मांड के चिरंतन स्वप्न से,
तुम अवतरित होकर आये थे।
(रबिन्द्रनाथ ठाकुर, "जन्मकथा")

टैगोर ने निष्काम भाव से देश और साहित्य की सेवा की। उनकी माला रूपी कवितायें प्रेम, मानवता, शांति और भाईचारे के मनको से पिरोई हुई होती थी। वे मानवता और एकता के दर्पण में राष्ट्रीयता का प्रतिबिम्ब देखते थे। उनका मत था कि मानवता की शांति के बिना राष्ट्र कल्याण की कल्पना कोरी है। भारतीयता की परिभाषा तो सदैव प्रेम और भक्ति के रस से तरबतर रहती है। भारत एक आध्यात्मिक देश है जिसके जड़ में मानव कल्याण का हित निहित है और जहाँ प्रेम एवं भक्ति की धारा सदियों से अविरल बहती आई है। भारत ने विश्व में अपनी आध्यात्म शक्ति सम्पन्न विचारधारा से एक विशेष स्थान प्राप्त किया है। हिमालय से कन्याकुमारी तक प्रेम और भक्ति की इस नदी में अनेक मनीषियों, कवियों और विचारधारकों ने गोते लगाये है। टैगोर ने मानवता, भक्ति,

प्रेम, और शांति के मूल्यों से बनी नौका को इस धारा में बहाकर संसार रूपी सागर को पार किया। उनके इन्हीं आदर्शों और विचारो ने भारत की आत्मा और स्वाभाव की पवित्रता को विश्वपटल पर उजागर किया है।

हो चित जहाँ भय–शुन्य, माथ हो उन्नत
हो ज्ञान जहाँ पर मुक्त, खुला यह जग हो
घर कि दीवारे बने न कोई कारा
हो जहाँ सत्य ही स्त्रोत सभी शब्दों का
हो लगन ठीक से ही स्त्रोत सभी शब्दों का
हो लगन ठीक से ही सब कुछ करने की
हो नहीं रूढ़ियाँ रचती कोई मरुस्थल
पायें न सुखने इस विवेक की धारा
हो सदा विचारो, कर्मो की गति फलती
बातें हो सारी सोची और विचारी
हे पिता, मुक्त वह स्वर्ग रचाओ हममे
बस उसी स्वर्ग में जागे देश हमारा।

(रबिन्द्रनाथ ठाकुर, "हो चित जहाँ भय–शुन्य, माथ हो उन्नत")

भारतीय संस्कृति ने टैगोर के विचारो को नया रंग दिया है। टैगोर ने देश प्रेम और प्रकृति प्रेम को अपने साहित्य का प्रमुख हिस्सा बनाया। टैगोर की कविताओं में देश की मिटटी की सुगंध,नदियों की कलकलाहट, दोपहरी की छाया, फूलों के भिन्न रंग आदि ने उन्हें अपने देश की आत्मा के करीब किया है। उन्होंने देश की भूमि पर पहाड़ो, नदियों, वनों आदि को मात्र भौगोलिक ढांचे के रूप में नहीं देखा बल्कि उस अचेतन प्रकृति को नव चेतना भर देने वाले प्रेरणा के रूप में देखा। देश के प्राकृतिक सौंदर्य, सांकृतिक मूल्य और अध्यात्मिक ज्ञान ने टैगोर के जीवन में एक सार्थक बदलाव लाया और इन्ही पक्षों के बल पर ही इन्होने नवराष्ट्र की नीव रखी। टैगोर ने 'सत्यम शिवम् सुन्दरम' के भावो को मानव जीवन में उकेरने की बात कही। टैगोर के अनुसार आध्यात्मिक विकास ही मानव विकास है और मानव विकास से ही राष्ट्र और समाज का विकास संभव है। इस तरह समाज के विकास के लिए मानव जीवन में प्रेम और भक्ति के बीज अंकुरित करना आवश्यक है, जिससे समाज रूपी उपवन में शांति, समृद्धि और स्वछंदता के पुष्प खिलें।

टैगोर के अनुसार समाज में प्राणी होते है, जिनके अपने भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व होते है, परन्तु देश एक संघठन होता है जिसका बाहरी और आन्तरिक स्वरुप सब जगह एक सा होता है। मानव और राष्ट्र कल्याण के लिए दोनों को एक दिशा में काम करना होता है। वर्तमान समय में मानव भाव और देश भाव के मध्य एक अदृश्य और अलक्ष्य विरोध पैदा हो गया है। मानव स्वार्थ ने समाज के कल्याण में बाधा उत्पन्न कर दी है। आज मानव स्वयं हित को समाज हित के ऊपर रखता है। मनुष्य स्वयं की प्रतिष्ठा, स्वयं के धर्म, स्वयं की जाति, स्वयं के विचार, लिए युद्ध करने लगा है। वह यह भूल गया है कि जिस धर्म और विचारों को उसने अपनाया है, वह समाज में कल्याण के लिए होते है, न कि विरोध के लिए। टैगोर आह्वान करते है कि, "भारत का चिरजागृत, चिरतरुण भगवान, आज हमारी आत्मा को आह्वान दे रहा है – उस आत्मा का जो अपरिमेय है, अपराजित है, जिसका अमृतलोक पर अनंत अधिकार है, लेकिन जो आज अन्धप्रथा और प्रभुत्व के अपमान से धूल में मुंह छिपा रही है। आघात पर आघात, वेदना पर वेदना देकर आज वह भगवान् पुकार रहा है। 'आत्मानं विधि'– अपने आपको जानो" (निबंध, ४३६)।

समाज में हर वर्ग के लोगों का आपस में सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। इस तरह के अभेद के बीच में स्वाधीनता को परिभाषित करना व्यर्थ है। टैगोर के अनुसार मनुष्य अगर अकेला रहना चाहता है, जहाँ किसी का उस पर हस्तक्षेप न हो, उसका किसी के प्रति कोई दायित्व न हो,वह किसी पर निर्भर न हो,ऐसी परिस्थितियों में वह किस स्वतंत्रता की मांग कर रहा है, वह तो स्वतंत्र ही है। परन्तु कोई मनुष्य ऐसी स्वतंत्रता की कामना नहीं करता है क्योंकि इस स्वतंत्रता में कोई सुख और शांति नहीं है। इसके लिए टैगोर ने कहा है–"हम निरी स्वाधीनता की शून्यता नहीं चाहते। हम भेद मिटाकर सम्बन्ध की परिपूर्णता प्राप्त करना चाहते है, और उसी को हम मुक्ति कहते है। देश के लिए भी हम नीतिसूचक स्वाधीनता नहीं चाहते। देश के समस्त लोगों के संबंधो को यथासंभव सत्य और बाधाहीन बनाना चाहते है" (निबंध, ४६१)। व्यक्ति अगर व्यक्तिगत इच्छाओं, द्वेष, राग को लेकर आगे बढ़ेगा देश तो फिर भी वही रहेगा कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के भौतिक विकास का समाज पर कोई असर नहीं होता है जब तक उसका आध्यात्मिक और नैतिक विकास न हो। परन्तु किसी व्यक्तिगत गलती या दोष कि वजह से पूरे समाज और देश को भुगतना पड़ सकता है। टैगोर सबको वापस अपनी जड़ो की तरफ लौटने को कहते है जो मनुष्य का असली स्वरुप है और जहाँ कोई भेदभाव नहीं है–

परवासी, आ जाओ घर
नैय्या को मोड़ लो इधर
देखो तो कितनी ही बार
नौका है नाविक की हुई आर–पार
मांझी के गीत उठे अम्बर पुकार
गगन गगन आयोजन , पवन पवन आमंत्रण
मिला नहीं उत्तर पर,
मन ने है खोले ना द्वार
हुए तभी गृहत्यागी,
निर्वासित कर डाले अंतर–बाहर

(रबिन्द्रनाथ ठाकुर, अनुवाद, प्रयाग शुक्ला)।

मानव को अहंकार त्याग कर संपूर्ण मानवजाति के साथ योग में होना चाहिए। तब हम राष्ट्रीय कल्याण की ओर अग्रसर हो सकते है। मध्यकाल में भारत के क्षेत्रीय धर्मो और जातियों में जब विरोध उत्पन्न हुआ तब कई भक्ति कवियों ने अपने प्रेम और भक्ति के बल से समाज के सभी वर्गों को एकसेतु में बांध दिया। भारत ने साधना और प्रेम कि वाणी से ईश्वरीय और मानवीय कल्पनाओं को एक धरातल पर ला खड़ा किया है और इसी धरातल पर चल कर हम उदार आनंद के साथ सारे विरोध और बैर के भाव मन से दूर कर सकेंगे। प्रेम और एकता के भाव से ही मानवता का कल्याण संभव है जिससे राष्ट्रनिर्माण की

नींव रखी जाएगी। भारतीय दर्शन, धर्म और संस्कृति ने भगवान का मानवीकरण कर के नर और नारायण का भेद खत्म कर दिया है, उनके अनुसार भगवन घट में अर्थात मानव मन में बसते है। जिसके लिए मानव को अपना मन पवित्र और साफ रखना होता है। इस आध्यात्मिकता के पाठ में मानवजाति के विकास पर बल दिया गया है। परन्तु यह भी सत्य है कि भारतवर्ष में विभिन्न धाराओं की गति के साथ राष्ट्रकल्याण की नौका को पार लगाना इतना आसान नहीं है। आदिकाल से ही संसार की समस्त शक्तियों का समाग्रह यहाँ आकर हुआ है उस भारत की आत्मा की विवेचना करना और किसी निष्कर्ष पर पहुँचना थोड़ा जटिल है।

टैगोर कहते है कि भारतीय इतिहास में मुसलमानों और हिन्दुओं के मिलन ने अकबर जैसे शासक को पैदा किया, जिसने मानव हित के लिए अनेक कार्य किये। मानव का मानव के प्रति भेद ने ही सारी समस्याओं को पैदा किया है जिसके कारण देशवासी अपनों के प्रति प्रेम को भूल कर विदेशियों (अंग्रेजो, मुसलमानों, आदि) के प्रति नफरत को ज्यादा महत्व देते है। टैगोर कहते है कि अंग्रेजो का भारत पर अधिकार एक बाहरी घटना है। मूल उद्देश्य देश के आन्तरिक अस्तित्व की सत्यता को बनाये रखना है। मानव का किसी के प्रति बैर एक प्रकार से उसके बारे में सोचना और उस पर ध्यान लगाने जैसा ही है, और इस तरह वह अपनी शक्ति सकारात्मकता के बजाय नकारात्मकता में लगाता है, और अपने अन्दर के मासूम व्यक्तित्व को मार देता है। इस तरह वह कभी भी स्वाधीन साम्राज्य की कल्पना नहीं कर सकता है। टैगोर कहते है, "आषाढ़ में जिस तरह मेघ तापशुष्क, प्यासी मिट्टी पर वर्षा के रूप में आता है, उसी तरह देश के सभी वर्गों के सभी लोगों के बीच उतरो। विविध दिशाओं में उन्मुख मंगल प्रयासों के बृहत जाल में स्वदेश को समेटो। कर्म क्षेत्र को सर्वत्र विस्तृत बनाओ–इतनी उदारतापूर्वक कि देश के उच्च नीच, हिन्दू, मुस्लमान, ईसाई, सभी के हृदय और प्रयास का मिलन हो सके" (निबंध, ४१३)।

स्वतंत्रता के पश्चात देश कि वर्तमान स्थिति में जहाँ भाईचारे और प्रेम के अंश नाममात्र रह गए है वही साहित्य का प्रभाव भी संकुचित हो गया है। लेखकों की सामयिक रचनाओं में मूल्यों और आदर्शो को जगह नहीं मिलती है। प्रगतिवाद, भौतिकवाद, भुमंडलीकरण, व्यावसायिकता के दुष्प्रभावों ने मानव को मानव से दूर कर दिया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत साहित्य को पुनर्जीवित किया जाये। इस सन्दर्भ में दिनकर जी की कविता याद आती है–

मैं भी सोचता हूँ, जगत में कैसे उठे जिघांसा,
किस प्रकार फैले पृथ्वीपर करुणा, प्रेम अहिंसा
जियें मनुज, किस भांति परस्पर होकर भाई–भाई,
कैसे रुके प्रवाह, क्रोध का कैसे रुके लड़ाई।
पृथ्वी पर हो साम्राज्य स्नेह का जीवन स्निग्ध सरल हो
मनुज प्रकृति से विदा सदा का दाहक द्वेष गरल हो
(शर्मा, ३०२)।

टैगोर उस अर्थ में राष्ट्रीय कवि नहीं थे जिसमें सिर्फ बाहरी घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाये। इस तरह की राष्ट्रीयता को वह अंधभक्ति समझते थे और समाज के लिए घातक मानते थे। उनकी राष्ट्रीयता में मानवता का चिंतन, एकता का सन्देश, प्रेम और सौहार्द की नीति शामिल थी। टैगोर के अनुसार स्वतंत्रता का उत्साह किसी एक मानव, या जाति या देश तक सीमित नहीं होता है अपितु समस्त जगत और मानवजाति के लिए उत्साहवर्धक होता है। खोखली नीति, अंधविश्वास, मिथ्याभिमान, अहंकार, अनावश्यक प्रतिस्पर्धा आदि दोषों से घिरें समाज की मुक्ति, विश्व बंधुत्व एवं विश्व कल्याण की राह में सहायक सिद्ध होती है। वे राष्ट्रीय संघर्ष को सिर्फ राजनीतिक रूप में नहीं देखते थे क्योंकि भारत की आजादी की गाथा में आम लोगों का बलिदान कम नहीं आँका जा सकता था।

मेरा शीश नवा दो अपनी
चरण–धूल के ताल में।
देव, डुबा दो अहंकार सब
मेरे आंसू–जल में।
||||||||||||||||||||||
मुझको अपनी चरम शांति दो
प्राणों में वह परम क्रांति हो
आप खड़े हो मुझे ओट दे
हृदय कमल के दल में
देव, डुबा दो अहंकार सब
मेरे आंसू जल में।
(रबिन्द्रनाथ ठाकुर, "मेरा शीश नवा दो")

वर्तमान काल में राष्ट्रवाद लोगों के लिए व्यवसायिकता का पर्याय बन गया है, और इस व्यवसाय में लोग राष्ट्रीयता का झूठा दिखावा कर एक अंधी और विचारहीन ताकत का निर्माण करते है और मानवता को दबाने की कोशिश में रहते है। वर्तमान समय में जो राष्ट्रीय जागरण आया है वह नव राष्ट्र निर्माण के विपरीत सामाजिक पतन की ओर यत्नशील है। लोग राष्ट्रीयता का झूठा ढोंग कर जनता को गुमराह कर रहे हैं और इस तरह वह राष्ट्रहित नहीं स्वयं का हित साध रहे हैं। ये वह लोग है जो अच्छाई करने में बहुत ज्यादा व्यस्त है, परन्तु स्वयं अच्छा होने के लिए समय नहीं निकल पाते है। ऊधम विरोध के कारण कुछ लोग क्रुद्ध आवेग में आकर समाज को क्षति पहुंचाते है। अचानक उत्तेजित होकर देश कल्याण और देशभक्ति की बातों में गंभीरता नहीं होती है ऐसे लोगों की भावना उस चकमक पत्थर के समान होती हैं जिसके रगड़ने से चिंगारी निकल सकती है पर घर का अँधेरा दूर नहीं हो सकता। इस तरह उत्तेजित होकर कोई कार्य पूर्ण नहीं होता हैं क्योंकि इसके पीछे की क्षण भर की भावना राष्ट्र कल्याण के विचार की परिपक्वता को नहीं समझ सकती है। टैगोर कहते है कि अधीरता और अज्ञानता के कारण हम अविश्वास की सीढ़ियां चढ़ते जाते हैं और यथार्थ और सत्य के धरातल से दूर हो जाते हैं।

निष्कर्ष

टैगोर हमेशा से जीवन जिज्ञासु रहे है और मानव के प्रति वे विशेष गंभीर रहते है। उनका मानना था कि पंखुड़ियों को तोड़कर फूल की खूबसूरती नहीं रखी

जा सकती है अर्थात् मनुष्य को मिटाकर राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता है। राष्ट्रनिर्माण से पहले समाज में पीड़ित मानवता के लिए उपाय करना जरूरी है तभी गतिशील विकास संभव है। मानव सेवा ही राष्ट्र सेवा है। टैगोर ने कहा है, "मैं सोया और स्वप्न देखा कि जीवन आनंद है। मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है। मैंने सेवा की और जाना कि सेवा ही आनंद है" ("विचार")। इस कथन में कोई संदेह नहीं है कि टैगोर ने समाज और मानव सेवा में अति योगदान दिया। सामाजिक क्षेत्र में उनके कार्य अविस्मरणीय है। टैगोर ने राष्ट्रवाद के नाम पर नरसंहार और असहिष्णुता का खंडन किया है और कहा है कि राष्ट्रवाद की इस संकीर्ण विचारधारा ने मानव के मन में वैमनस्य और स्वार्थ उत्पन्न कर दिया है। राष्ट्रवाद के राजनीतिकरण और व्यापारीकरण ने राष्ट्र की आत्मा को छिन्नभिन्न कर दिया है। इस तरह देश के अध्यात्मिक और प्राकृतिक विकास पर भी चोट की गयी है। टैगोर जानते है कि राष्ट्रवाद की यह संकीर्ण सोच भारत की अध्यात्मिक चेतना और मानवीय मूल्यों पर आघात कर सकती है परन्तु इसकी नींव को हिला नहीं सकती है। भारतीयता की पहचान ही इन मूल्यों पर टिकी है, जो राष्ट्रवाद कि आक्रामक नीति का डटकर सामना करते है। टैगोर संकीर्ण राष्ट्रीयता के पक्षधर नहीं है, वे राष्ट्रवाद के समझ का दायरा फैलाना चाहते है, जो सामाजिक एकता और शांति के द्वारा ही सफल हो सकता है। उनकी राजनीति चरित्र निर्माण पर बल देती है। टैगोर हमेशा यह मानते थे कि मनुष्य की मानवीय शक्तियों की धार से धरती माता की रक्षा करना ही सच्ची देशभक्ति है। जैसा कि प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष शक्ति ज्यादा बलशाली होती है। पूरी स्वतंत्रता पाने के लिए बड़ी कीमत चुकानी होती है, जो कि एक दिन कि बात नहीं है। सदियों से कई लोगो ने इस हवन की अग्नि को घी दिया है और आगे भी देते आएंगे। टैगोर का हमेशा यह मानना रहा है कि वह एक आशावादी इंसान है और जितने भी दरवाजे बंद हो जाये और जितना भी अंधकारमय समय हो, उम्मीद की रोशनी का दरवाजा एक दिन जरूर खुलेगा। मानव भावना ही राष्ट्र भावना है। अगर मनुष्य की सोच पवित्र और सच्ची है तो राष्ट्र भी अच्छाई की ओर विकास करेगा और अगर मनुष्य की भावना झूठी और मलिन है तो राष्ट्र गतिहीन हो जायेगा। परन्तु इस सत्य को भी नाकारा नहीं जा सकता है कि सदियों से भारत की भावना मानवता के कल्याण के लिए ही सृजित हुई है। दिनकर जी के शब्दों में, "भारत एक भाव है जिसको पाकर मनुष्य जगता है भारत एक जलज है जिस पर जल का न दाग लगता है" (शर्मा, ३०७)।

भारतीयता की विविधता में एकता ही पहचान है जिसे वर्तमान परिपेक्ष्य में संभालना दुर्लभ प्रतीत हो रहा है। मानव ने स्वयं को आध्यात्मिक और नैतिक बंधन से आजाद कर लिया है, वह इसको आजादी समझता है। वह यह नहीं जानता है अब वह स्वार्थ, अन्धविश्वास, स्पर्धा और लालच की गर्त में समाहित हो रहा है। लेकिन टैगोर का मानना है कि सच्चाई बुराई को नकारने में नहीं बल्कि उस पर जीत हासिल करने में है। टैगोर ने आशा की किरण बनाये रखते हुए कहा है।

आज का शूद्र इतिहास कुछ ही दिनों बाद समग्र में विलीन होकर अगोचर हो जाएगा। भारत की जो परम महिमा कठोर दुरूख–संघर्ष के बीच विश्वकवि के सृजनांद को वहन करती आई है, उसी की अखंड मूर्ति हम भक्त और साधक अपने प्रशांत ध्यान नेत्रों में देखेंगे। चारों ओर के कोलाहल और चित–विक्षेप के बीच साधना को महान लक्ष्य के प्रति अभिमुख रखेंगे। हम विश्वास रखेंगे कि इस भारत में, जहाँ युग युगांतर तक मानव दृचित की सारी आकांक्षाओं का मिलन हुआ है, ज्ञान के साथ–साथ ज्ञान का मंथन होगा, जाति–जाति का समन्वय होगा" (निबंध, ४२४)।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *"रविंद्रनाथ ठाकुर",कविता कोष। www.akavita kosha org/ tagore*
2. *"रबिन्द्रनाथ ठाकुर के अविस्मरणीय विचार" हिंदी साहित्यमार्गदर्शन,२०१४। wwwAhindisahityadarpan Abu>2014/05*
3. *रविंद्रनाथ के निबंध, संपादक, अब्दुल वहूद।*
4. *शर्मा, क्रांति कुमार, हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्य का विकास, भोपालरू नवयुग प्रकाशन, १६७०।*
5. *सूरी, नवदीप, भारत संदर्श पत्रिका ,खंड २४,अंक २ , नई दिल्ली, २०१०।*
6. *विकिपीडिया , रबिन्द्रनाथ ठाकुर ।*
7. *Dasgupta, Tapati, Social Thought of Rabindranath Tagore, A Historical Analysis] Abhinav Publication] 1993*
8. *Singh] KunjoA Humanism and Nationalism in Tagore's Novels] Washington, Atlantic Publishers and Dist] 2002*
9. *Tagore, Rabindranath, Selected Essays, New Delhi, Rupa Corporation] 2004*